International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 8.141
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 7 No. 35 March – April - 2026

# डिजिटल युग में हिंदी भाषा और साहित्य

**मिनेश रामनाथ सातपुते[1], प्रो डॉ.जितेंद्र पाटील[2]**
[1]*शोधार्थी, हिंदी अनुसंधान केंद्र, संगमनेर महाविद्यालय संगमनेर,*
[2]*शोध निर्देशक, संगमनेर महाविद्यालय संगमनेर*
*Corresponding Author –* मिनेश रामनाथ सातपुते
**DOI - 10.5281/zenodo.20485576**

**सार *(Abstract):***

*डिजिटल युग आधुनिक युग की देन है। जिसकी शुरूवात संगणक के विकास के साथ शुरू होती है। संगणक के साथ इंटरनेट के प्रभावशाली जोड से डिजिटल युग में चार चाँद लगा दिया है। इस युग ने मनुष्य के हर काम को आसान कर दिया हैं। भाषा और साहित्य भी इससे दूर नहीं हैं। डिजिटल युग में साहित्य अपनी विशेषता को लेकर प्रवेश करता हैं उनमें मुख्य रूप से - त्वरित लेखन, तुरंत प्रकाशन, त्वरित समर्थन, कम समय में आधिक लोगों के पास पहुंचना, कम शब्दों में व्यापक जानकारी, प्रभावी लेखन, युवाओं का आगमन, प्रकाशक की एकाधिकार समाप्ती आदि। हिंदी साहित्य में डिजिटल युग में ऑनलाईन पत्रकारिता, ई-पत्रकारिता, ई साहित्य, न्यू मीडिया साहित्य, ब्लॉग लेखन, सोशल नेटवर्किंग साइट, वेबसाईट, ऑडियो-वीडियो, एनीमेशन, मल्टीमीडिया आदि का प्रचार आधिक मात्रा में हुआ हैं। ज्यो आज हिंदी प्रेमी पाठको तक आसानी से पहुँचता हैं। जिससे नये रचनाकारों का कविओं का प्रवेश आसानी से होता है। ज्यो समाज के लिए पथदर्शक साबित हो सकते है।*

मानवी सभ्यता का विकास काफी प्राचीन हैं। मानवी विकास के प्रथम चरण में मनुष्य विस्थापित जीवन बीता रहा था। विस्थापित जीवन का अंत कृषि के विकास में हुआ, जिसके परिणाम मानवी जीवन में स्थिरता का अनुभव हुआ। स्थिरता में मानवी दिमाग का संतुलित विकास के लिए आधिक गती प्राप्त हुई। मानवी जीवन विकास प्रक्रिया में पहिया के अनुसंधान का महत्व हैं। जिससे उसके जीवन को गती प्राप्त हुई। ज्यो आज-तक निरंतर बनी हुई है। मनुष्य के विकास प्रक्रिया में भाषा का भी अनन्य साधारण महत्व हैं। भाषा के माध्यम से व्यक्ति अपने भावों को दूसरों से व्यक्त करता हैं। यह कहे तो गलत नहीं होगा कि भाषा मनुष्य विकास सभ्यता का मुख्य आधार बनी हुई हैं। जिसने मनुष्य को अन्य जीवों से सामाजिक प्राणी बनाया हैं। भाषा ने सभी मनुष्यों को एकता का सूत्रों में पिरोया रखा हैं।

प्रत्येक काल का युगीन परिवेश साहित्य में व्यक्त होता हैं। समकालीन सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, के व्यवस्था के साथ उपलब्ध साधन संसाधन और लोगों की मानसिक स्तर का पता चलता है। इस संदर्भ में आ.रामचंद्र शुक्ल कहते है –"जबकि प्रत्येक देश का साहित्य वहां की जनता की चित्तवृत्तियों का संक्षिप्त प्रतिबिंब होता है, तब यह निश्चय है कि जनता की चित्तवृत्ति में परिवर्तन के साथ-साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होता रहा चला जाता है। आदि से अंत तक इन्हीं चित्तवृत्तियों की परंपरा को परखते हुए साहित्य परंपरा के साथ उनका सामंजस्य बिठाना ही साहित्य का इतिहास कहलाता है। जनता की चित्तवृत्ति बहुत कुछ राजनीतिक, सामाजिक, सांप्रदायिक और धार्मिक परिस्थिति के अनुसार होती है।" [1] अर्थात साहित्य समाज का दर्पण है। समाज के

समस्त क्रिया कलापों को साहित्य में स्थान होता हैं। आदिकाल से इक्कसवी सदी तक साहित्य में समाज की वास्तविकता अंकित हुई है। समकालीन समाज पारंपरिकता को छोडकर डिजिटल युग को अपनाने से साहित्य नवीनता और तकनीक सुविधा से युक्त हुआ हैं।

डिजिटल युग में पूरा विश्व एक गांव के रूप में विकसित हुआ हैं। जिसमें व्यक्ति किसी आँचल, क्षेत्र, प्रदेश, देश न होकर पूरे विश्व का सदस्य बन बैठे है। डिजिटल युग का मनुष्य जीवन पर अभूतपूर्व प्रभाव पडा हैं, ज्यो काफी लक्षणिय हैं। जिससे साहित्य भी अछूता नहीं हैं। डिजिटल क्रांति एक दिन, एक साल में नहीं हुई, उसने लंबी यात्रा करके वैज्ञानिक युग में पूरे मानव समाज को अपने गिरफ्त में लिया हैं। जिसकी शुरूवात विश्व में संगणक के क्रांति से हुई । संगणक का विकास उन्नसवी शताब्दी में चार्ल्स बैबेज ने किया। संगणक 'एनालिटिकल इंजन' से शुरू हुआ। 1970 में अमरीका में माइक्रोप्रोसेसर की क्रांति के बाद संगणक प्रणाली में अमूलाग्र परिवर्तन हुआ। उसके बाद विकसनशील राष्ट्र की नजर भी संगणक प्रणाली पर रूक गयी। जिसमें 1950-60 के दशक में भारत का पहला संगणक की मुंबई में शुरूवात हुई। यह एक विदेश संगणक मॉडल था। भारत में 1980 के दशक में पहला स्वनिर्मित संगणक सिद्धार्थ का निर्माण किया। 1960 के दशक में मुख्य रूप से सरकारी विभाग और अनुसंधान संस्थानों में संगणक का प्रयोग होना शुरू हुआ।

संगणक की क्रांति के बाद ही मनुष्य के जीवन में परिवर्तन की गती अधिक मात्रा में हुई है। मनुष्य का मूलतः स्वभाव है, कि वह परिवर्तन को आसानी से स्वीकार नहीं करता। संगणक के शुरूवात समय में यही दिखाई देता है। संगणक शुरूवात में मनुष्य रोजमरा के जीवन में काम किये जाते थे। संगणक के साथ इंटरनेट का जुटाव ने ही इस डिजिटल दुनिया की नींव रखी है। ''विश्व में सबसे पहले इंटरनेट का प्रयोग 29 अक्तूबर 1969 को हुआ। इसे अमरीका के रक्षा विभाग व्दारा विकसीत किया गया। आधुनिक इंटरनेट प्रणाली जो टी.सी.पी. प्रोटोकॉल पर आधारित है 1983 में विकसित हुई। शुरूवाती दौर में इंटरनेट का प्रयोग गिने चुने क्षेत्र में ही जैसे- संरक्षण, अनुसंधान में होता था। उसमें वर्ल्ड वाइड वेब (w.w.w) के विकास साथ आम जनता के लिए उपलब्ध हुआ।''[2] भारत में इंटरनेट की शुरूवात आम जनता के 15 अगस्त 1995 को विदेश संचार निगम लिमिटेड (V.S.N.L.) के व्दारा की गई। यह केवल मुबंई, दिल्ली, चेन्नई एवं कोलकता जैसे नगरों को अपनी सेवा दे पाती थी। भारत में शुरूवाती दौर में केवल शैक्षणिक और अनुसंधान उद्देश्यो के लिए प्रयोग किया जाता था। बृजेंद्र कुमार सिंघल को भारत में इंटरनेट का जनक कहते है। सही मायने में इंटरनेट की शुरूवात विदेशो में वर्ल्ड वाइड वेब के साथ ही शुरू हुई। उसके उपरांत इंटरनेट की क्रांति के बाद आज इंटरनेट भारत के हर व्यक्ति के जेब तक पहुंच चुका है। इंटरनेट की यह क्रांति अन्य क्रांति की तुलना में काफी गतिशील है। इस गतिशीलता के कारण मनुष्य के जीवन में काफी परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। डिजिटल युग इसी परिवर्तन का परिणाम है।

डिजिटल युग में साहित्य भी परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। डिजिटल साहित्य के अंतर्गत ऑनलाईन पत्रकारिता, ई-पत्रकारिता, ई साहित्य, न्यू मीडिया साहित्य, ब्लॉग लेखन, सोशल नेटवर्किंग साइट, वेबसाईट, ऑडिओ-वीडियो, एनीमेशन, मल्टीमीडिया आदि का समावेश होता है। ज्यो काफी व्यापक नवीनता अपनाए हुए है। ई साहित्य के अंर्तगत मुद्रित माध्यम पुस्तकों में भी उपलब्ध है। जिसमें मुख्य रूप से प्राचीन साहित्य से लेकर आज तक के सभी साहित्यिक विधाओं की रचना पी.डी.एफ स्वरूप में अलग-अलग वेबसाइट पर उपलब्ध है। वर्तमान परिस्थिति में गद्य कोश, कविताकोश, शब्दकोश, काव्यालय आदि वेब पृष्ठों

पर साहित्य का अध्ययन आसानी से किया जा सकता है। इसी कारण किसी भी स्थान पर खाली बैठे, खाली समय में वह साहित्य पढ़ा जा सकता है। इसमें किसी देश की सीमा का प्रश्न उपस्थित नहीं होता। अमेरिका में बैठा हिंदी पाठक हिंदी साहित्य का इतिहास, कबीर के दोहे जैसे रचनाओं का अध्ययन अपने घर बैठे कर सकता है। मेरे हिसाब से ज्ञान प्राप्ती के लिए यह सबसे बडी डिजिटल आजादी है। इसके साथ ही डिजिटल व्यवस्था में साहित्य को न केवल पठन, लेखन के रूप में प्राप्त होता है बल्कि दृश्य, श्रव्य माध्यम से भी प्रसारन होता है। जो ऑडियो-वीडियो एनीमेशन, मल्टीमीडिया तकनीकी का प्रयोग से अत्यंत प्रभावशाली रूप में सामने आया है। पाठको को आधिक आर्कषित करते है। डिजिटल प्रणाली में उपलब्ध साहित्य का रसस्वादन करने उपरांत तुरंत पाठक अपनी प्रतिक्रिया व्यत्क कर सकता है। अपने विचार प्रतिक्रिया स्वरूप भेज सकता हैं। जिससे रचनाकार एवं पाठकों के बीच रिश्ता निर्माण होता है। ज्यो रिश्ता एक आलोचक, समीक्षक, समर्थक के रूप में हो सकता है। जिससे रचनाकार के कौशल को और आधिक निखारने में सहायता मिलती है।

डिजिटल साहित्य में ब्लॉग लेखन का योगदान महत्वपूर्ण है। ब्लॉग लेखन अर्थात अपने विचारों, भावानाओं, अनुभव और ज्ञान को इंटरनेट के माध्यम से पाठकों तक पहुँचना है। हिंदी साहित्य में ब्लॉग लेखन की शुरूवात 2000 के मध्य में हुई। जिस समय गूगल के ब्लॉग और वर्ड प्रेस जैसे मुफ्त मंचों पर हिंदी टाइपिंग में यूनिकोड के विकास के बाद साहित्यकारों को बिना प्रकाशन से सीधे पाठकों के साथ जुडने की सुविधा उपलब्ध हुई। डिजिटल साहित्य में विषयों की अमर्यादा, किसी भी विधा में तुरंत लेखन, त्वरित प्रकाशन, और तत्काल प्रतिक्रिया प्राप्त की जा सकती हैं। जिसमें किसी प्रकार का कोई अवरोध नहीं। डिजिटल युग की गतिशलीता का एक प्रभावी उदाहरण है ब्लॉग लेखन। जिसका प्रचार-प्रसार आज डिजिटल साहित्य जगत में जोरो-शोरो से हो रहा है। शुरूवाती ब्लॉग ज्यादातर व्यक्तिगत होते थे, जिसमें लेखक अपने विचारो अुनभवों का सांझा करते थे। हिंदी साहित्य से संबंधित कुछ उल्लेखनीय ब्लॉग है जैसे- दैनिक भास्कर ब्लॉग, हिंदी ब्लॉग, बेव दुनिया हिंदी, हिंदी कुंज आदि। ऐसे ब्लॉगो की रचना से हिंदी भाषा एवं साहित्य की लोकप्रियता वैश्विक स्तर पर बढ रही है। ज्यों साहित्यिक रचनात्मकता को बढावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

ब्लॉग लेखन के लाभ भी आधिक है। हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार, हेतु भूमंडलीकरण के दौर में डिजिटल माध्यम प्रभाव माध्यम है। ज्यों कम समय में विश्व के अनगिणत लोगों तक पहुँचता है। साहित्यिक रचनात्मकता को बढावा प्राप्त होता है। नये लेखकों को रचना निर्माण में और पाठकों से जुडने का सुनहरा अवसर प्राप्त होता है। पाठकों तक पहुंचने का आसन माध्यम ब्लॉग लेखन है। रचनाकार और पाठकों के बीच विचार विनिमय करने का माध्यम बना हुआ है। बढती जनसंख्या में साहित्य को प्रकाशित करने में सहयता प्रदान करता है। साहित्य में ब्लॉग लेखन को भविष्य में उज्वल संभावनाएँ भी दिखाई देती है। इंटरनेट की बढती लोकप्रियता, इंटरनेट की उपयोगकर्ता की बढती जनसंख्या, लोगों की स्मार्ट फोन में रूचि, विषयों की विविधता, युवा लेखको का आगमन, पाठक और लेखकों के बीचमजबूत रिश्ता तकनीकि प्रगती आदि।

डिजिटल साहित्य के अंतर्गत ब्लॉग लेखन के साथ-साथ ई पत्रिका का प्रचलन हो रहा है। जिसका प्रकाशन दैनिक, साप्ताहिक, और मासिक रूप से प्रकाशित होती हैं। साहित्य की विधाओं में कहानी, उपन्यास, निबंध, नाटक, आलोचना, यात्रा वृतांत, जीवनी आत्मकथा, संस्मरण तथा शोध आलेख आदि में ई पत्रिकाओं ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं। हिंदी साहित्य ई पत्रिकाओं में मुख्य रूप

से अभिव्यक्ति, हिन्दवी, भारत दर्शन, साहित्य कुंज, सहचर, ई-प्रदीप, वीणा ऑनलाइन आदि प्रमुख हैं।

डिजिटल व्यवस्था की मानवी क्रांति ने साहित्य के संरक्षण के संकट समाप्त कर दिया हैं। किसी भी साहित्य की, किसी भी विधा कि, किसी भी रचानाओं की हजारो प्रतियां छापी जा सकती है, उस रचना की सीडी इंटरनेट की स्मृति में कई सालों तक सुरक्षित रखी जा सकती है। डिजिटल युग में साहित्य प्रचार की अभूतपूर्व वृध्दि हुई हैं और लेखको को प्रकाशको के व्दारा शोषण सी मुत्कि मिली है।

डिजिटल युग साहित्य के लिए कई अवसर लेकर आया हैं। नये लेखको के लिए एक आजादी ही है ज्यों किसी भी विषय पर अपने विचार प्रकट कर तुरंत प्रकाशित कर सकता है। पाठको के लिए देश सीमा की पाबंदी हाटा दि है। विश्व के किसी भी कोने से साहित्य को पढा जा सकता हैं उस पर अपने विचारों को सांझा भी किया जा सकता हैं। ऐसी आजादी 1947 के बाद डिजिटल युग के रूप में साहित्यकार एवं पाठक पुन्हा प्राप्त हुई हैं। रचनाकार किसी के बंधन में रहकर रचना की निर्मिती नहीं कर सकता। सभी प्रकार के बंधनों से उसे छुटकारा मिला है। डिजिटल युग क्रांति के साथ साथ स्वतंत्र भी प्रदान करता हैं।

**संदर्भ सूची:**

1. हिंदी साहित्य का इतिहास आ.रामचंद्र शुक्ल- 2019
2. **Internet Wikipedia**